बच्चन जी की यादें

गुलाब खंडेलवाल

बच्चन जी की यादें—

मुझे हिंदी-काव्य की तीन धाराओं में अवगाहन का सौभाग्य मिला है। पहली धारा के प्रवर्तक अयोध्यासिंह उपाध्याय जी हरिऔध का 'प्रिय-प्रवास' और मैथिलीशरण जी गुप्त की कृति 'साकेत' मात्र 11-12 वर्षों की अल्पायु में अपने गुरु स्वामी नारायणानंद सरस्वती की कृपा से मैंने हृदयस्थ कर लिये थे। उसके बाद प्रसाद जी की 'कामायनी' निराला जी का 'परिमल' और पंत जी के 'गुंजन' ने मेरा मन मोह लिया। परंतु जिन दो कवियों ने मेरे हृदय पर पूर्णतः अधिकार कर लिया था, वे थे बच्चन और दिनकर। यदि सच कहा जाय तो गुप्त जी और हरिऔध जी में हिंदी काव्य-गंगा की धारा हिमालय की गोद से निर्मल, उच्छल रूप में निकलती हुई दिखाई देती है, जिसे देखकर नयन-सुख तो मिलता है पर जिसमें स्नान नहीं किया जा सकता। आगे चलकर प्रसाद, पंत, निराला के रूप में यह हरिद्वार की तीव्र-प्रवाहमयी गंगा की उस धारा के समान दिखाई देती है जिसका अवगाहन कर मन-प्राण निर्मल तो हो जाते हैं तथा जो चित्त में साहित्य की रचनाधर्मिता के सोये हुए संस्कार भी जगा देती है परंतु जिसमें स्नान समय-समय पर पंडित-पुरोहितों के मंत्रों के साथ ही किया जा सकता है। परंतु गंगा की यही धारा बच्चन और दिनकर के रूप में जब तीर्थराज प्रयाग और वाराणसी में पहुँचती है तो अपनी सहज स्वाभाविक गति और सहज सुलभ शीतलता से साधारण से साधारण व्यक्ति को भी घंटों अपने प्रवाह में बिलमाये रखने में समर्थ बन जाती है और उसमें से निकलने का स्नातक का जी ही नहीं करता है।

मुझे याद है, 12-13 वर्षों की अल्पायु में भी मैं दिनकर जी की 'रसवंती' की और बच्चन जी के 'रस-कलश' की कवितायें कितने प्रेम से गाया और दुहराया करता था।

सौभाग्य से हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ते समय पहले साल ही, मात्र 14 वर्ष की अल्पायु में, मुझे अपने साहित्य-गुरु कृष्णदेव प्रसाद जी गौड़

की कृपा से हरिऔध जी और गुप्त जी का प्रेरणादायक सान्निध्य प्राप्त हो गया। गुप्त जी और निराला जी ने तो मुझे पुत्रवत् स्नेह प्रदान किया था परंतु अपने छोटे भाई के रूप में जिस कवि ने मुझे अपना बना लिया था वे बच्चन जी ही थे। बच्चन जी, मेरे नगर गया में, हरिऔध जी के साथ 1934 या 35 में पधारे थे जहाँ उनके सम्मान में एक कवि-समोलन आयोजित किया गया था। उस सम्मेलन में बच्चनजी ने अपनी कवितायें सुनायी थीं जो उनकी पुस्तक 'रस-कलश' में मुझे मिल गयी थीं और जिन्हें मैं उन्हींकी धुन में दुहराया करता था।

परंतु बच्चनजी से परिचित होने का सौभाग्य तो मुझे 1941 में ही मिल सका जब मैं हिंदू विश्वविद्यालय, काशी में द्वितीय वर्ष का विद्यार्थी था। वे मिरजापूर के द्विदिवसीय ऐतिहासिक कवि-सम्मेलन में भाग लेने आये थे। उस समय तक बेढब जी के साथ मैं भी भारत में दूर-दूर कवि-सम्मेलनों में भाग लेने लगा था और उस कवि-सम्मेलन में भी आमंत्रित था। पं0 रामचंद्र शुक्ल सभापति थे। मंच पर बच्चन जी के पास ही बेढब जी के साथ मैं बैठा था। कवि-सम्मेलन प्रारंभ होने के पूर्व बेढब जी ने बच्चन जी से मेरा परिचय कराया। मेरे लिए यह अत्यंत रोमांचक क्षण था क्योंकि बच्चन जी को मैं अपना आदर्श कवि मानता था। बच्चन जी ने जब मुझसे हाथ मिलाया तो वे मेरा हाथ देर तक पकड़े रहे और बेढब जी से उन्होंने कहा 'कितना मुलायम हाथ है ! यह किसी कलाकार का हाथ ही हो सकता है।' इस प्रकार उन्होंने मेरा हाथ देखकर उसी समय मेरे कवि होने की घोषणा कर दी थी। इसके बाद यद्यपि प्रारंभ में, कवि-सम्मेलनों में उनसे भेंट होती रहती थी परंतु कवि सम्मेलनों का संपर्क टूट जाने पर भी पत्रों-द्वारा संपर्क उनसे अंत तक बना रहा। बच्चन जी की तरह पत्रोत्तर देने में सतर्क दूसरे किसीको भी मैंने नहीं देखा। उनके पत्र निरंतर मुझे प्रेरणा देते रहते थे और मैं जब भी कोई नयी चीज लिखता था या नया काव्य-प्रयोग करता था तो उनका आशीर्वाद अवश्य माँगता था और वे

तुरत अपनी सम्मति, सलाह और सुझावों से मेरा उत्साह बढ़ाते थे तथा मेरा मार्ग-प्रदर्शन करते थे। केवल मेरे लिए ही नहीं, बच्चन जी उन सभी नवोदित रचनाकारों के लिए सदैव उपलब्ध थे जो उनसे मार्ग-दर्शन की अपेक्षा रखते थे। उन्होंने अन्य कई कवियों की तरह अपना कोई गुट नहीं बनाया न कोई अलग खेमा ही खड़ा किया जो वे अपनी लोकप्रियता, विद्वत्ता एवं रचनाधर्मिता के बल पर सहज ही कर सकते थे। अपने को चर्चित करवाने की उन्होंने कभी चेष्टा नहीं की। अपनी 'रही बुलबुल डालों पर बोल' नामक कविता की निम्न पंक्तियों के अनुसार मानापमान, यश-अयश से सर्वथा निरपेक्ष रहकर वे अपने मन के भावों को काव्य के परिधान में सजाते रहे।

करे कोई निंदा दिनरात
सुयश का कोई पीटे ढोल
किये अपने कानों को बंद
रही बुलबुल डालों पर बोल

मैं जब 1939 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ने आया उस समय तक बच्चन जी ट्रेनिंग कालेज में अपना अध्ययन पूरा करके बनारस से जा चुके थे, परंतु उनके गीत वहाँ की हवा में गूँज रहे थे। वहाँ शायद ही कोई कवि ऐसा हो जिसने उन्हें न पढ़ा हो। हर कवि-सम्मेलन में उनकी रचनाओं पर पैरोडियाँ भी सुनने को मिलती थीं जो उनकी लोकप्रियता का ही प्रमाण थीं।

मैं तो बच्चन जी का भक्त ही था। ऐसी अवस्था में जब 'कविता' नामक मेरी प्रथम काव्य-पुस्तक पर बच्चन जी ने यह प्रतिक्रिया व्यक्त की––रचनाये पढ़ने पर प्रायः ऐसा लगता है, जैसे विधाता ने मेरे ही हृदय का एक टुकड़ा काटकर तुम्हारे अंदर रख दिया है। मैंने तुम्हारी 'कविता' को अपने उन संग्रहों में रख दिया हैं जिन्हें मैं फिर-फिर देखना चाहूँगा — तो मुझे कितना आनंद और प्रेरणा मिली होगी इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

बच्चन जी के साहचर्य का एक मनोरंजक प्रसंग याद आ रहा है। एक कवि-सम्मेलन से लौटते समय बच्चन जी और शिवमंगल सिंह सुमन भी हम लोगों के साथ, शायद बरेली से, ट्रेन में एक ही डिब्बे में आ रहे थे। उसी डिब्बे में अत्यंत आधुनिक परिवेश में सजी एक नवयुवती भी जो किसी देशी राज्य की राजकुमारी थी, सफर कर रही थी। वह सिग्रेट पी रही थी और बीच-बीच में सभीसे खूब खुलकर साहित्य-चर्चा भी कर रही थी। उसे सुमन जी ने सिग्रेट औफर भी किया था जो उसने बड़े प्रेम से ले लिया था। वह बच्चन जी की कविताओं की प्रेमी भी थी और बच्चन जी भी उसकी बातचीत में रुचि ले रहे थे। गाड़ी बीच में जब एक बड़े स्टेसन पर रुकी तो वह नवयुवती एकाएक गाड़ी से उतर पड़ी। वह नीली साड़ी पहने थी। सुमन जी उसे अपनी कविता सुनाने को आतुर थे और डिब्बे के दरवाजे पर यह सोचकर खड़े रहे कि वह कुछ लेने को उतरी है और अभी लौटकर आयेगी। परंतु वह महिला जो गयी सो गयी और गाड़ी खुल भी गयी। बच्चन जी और सुमन जी आश्चर्य-चकित थे कि इतनी घनिष्टता से बातें करती हुई वह बिना औपचारिक विदाई लिए और बिना अपना पता-ठिकाना दिये कैसे उतर जा सकती है। बेढब जी ने तुरत बच्चन जी के एक प्रसिद्ध गीत की 'मैं जीवन में कुछ कर न सका' जिसका उन्होंने पिछले कवि सम्मेलन में पाठ किया था, परोडी जोड़कर सुनाई जिसका बच्चन जी ने बड़ी ज़िन्दादिली और ठहाके के साथ स्वागत किया। बच्चन जी के गीत की पैरोडी इस प्रकार थी

मैं जीवन में कुछ कर न सका
देखा था उनको गाड़ी में
कुछ नीली-नीली साड़ी में
वे स्टेसन पर उतर गयीं मैं उन पर थोड़ा मर न सका
मैं जीवन में कुछ कर न सका

श्रीमती तेजी से विवाह के उपरांत बच्चन जी के विवाहोपलक्ष में, इलाहाबाद में एक विशेष पार्टी आयोजित की गयी थी जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति डा. अमरनाथ झा ने आयोजित किया था। उस आयोजन में मैं भी सम्मिलित हुआ था। बच्चन जी की बगल में नवपरिणीता श्रीमती तेजी बैठी हुई थीं। यद्यपि उसके बाद दशों बार बच्चन जी के साथ उम्र की बदलती हुई अवस्थाओं में मैंने श्रीमती तेजी को देखा है, परंतु उनका वह सौंदर्य की आभा से प्रदीप्त मुखमंडल आज भी मेरे दृष्टि-पटल पर सुरक्षित है। शायद उसीके लिए नेहरू जी के निवासस्थान पर सरोजनी नायडू ने श्रीमती तेजी का परिचय कराते हुए कहा होगा - दी पोएट ऐंड हिज पोएम, अर्थात् कवि और उसकी कविता। इसका उल्लेख बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा में किया है।

बरनार्ड शा से एक प्रकाशक ने जब कहा कि आप अपनी आत्मकथा लिखें तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरी आत्मकथा कौन पढ़ना चाहेगा। न तो मैंने किसीका खून किया है और न किसी महिला से बलात्कार। बच्चन जी का जीवन निराला के समान अव्यवस्थित और विरोधाभासों से भरा नहीं था। एक-एक कदम पर संघर्ष करते हुए वे सहज रूप से जीवन में बढ़े थे परंतु फिर भी उनकी आत्मकथा इतनी रोचक है कि किसी भी भाग को कहीं से भी उठाइए, छोड़ने का मन नहीं करेगा। मुझे उनकी एक बहुत बड़ी ख़ूबी यह लगती है कि वे सदैव अपने मन के सच्चे भावों को बिना किसी नमक-मिर्च के शब्दों में पिरोते रहे हैं। उनमें बायवी अनुभूति नहीं है, भोगा हुआ यथार्थ है जो किसी भी साहित्यिक रचना की पहली शर्त है। भोगा हुआ यथार्थ से मेरा मतलब यह नहीं है कि अभिव्यक्त अनुभूति आपकी अपनी यथार्थ घटना से ही हुई हो। वह दूसरों की भोगी हुई अनुभूति से आपका तादात्य होने पर भी आपके भोगे हुई यथार्थ की संज्ञा पा लेगी। अंतर इतना ही है कि भिन्न-भिन्न कलाकार उसे भिन्न-भिन्न प्रतीकों के माध्यम से अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपने-अपने ढंग से व्यक्त करते हैं। बच्चन जी ने

उसे मधुशाला के प्रतीक द्वारा व्यक्त किया है परन्तु इस प्रतीक को समझने में भूल नहीं करनी चाहिए। उर्दू कविता में भी शराब का जो प्रतीक है और उसका जो गुणगान किया जाता है उसके लिए यह कहना उचित नहीं होगा कि वह शराब की ही प्रशंसा है। अच्छे कवियों के हाथ में शराब प्रतीक रूप में ही आती है। इस प्रसंग में बच्चन जी से संबंधित एक बात की याद आ रही है। जिन दिनों बच्चन जी की मधुशाला की धूम थी, एक व्यक्ति ने उनकी पहली पत्नी श्यामा देवी से पूछा कि बच्चन जी तो खूब शराब पीते होंगे जो उन्होंने मधुशाला की इतनी प्रशंसा लिख दी है। श्यामा जी ने उत्तर दिया कि अब तो मैं समझती हूँ कि उमरखैयाम भी शराब नहीं पीते होंगे।

बच्चन जी से एक बार जब मैं मिलने गया तो बातों में हम लोग इतने डूब गये कि समय का ध्यान ही नहीं रहा। मेरे साथ बच्चन जी के और मेरे घनिष्ट मित्र ब्रजकिशोर नारायण भी थे। इतने में एकाएक तेजी जी आ गयीं और बच्चन जी को लक्ष्य करके नाम के अनुरूप तेजी से बोलने लगीं, 'वाह, मेरी विदेशयात्रा की बात भूल गये ! साहित्य-चर्चा में ऐसे डूबे हैं कि यह भी भूल गये कि मेरा पासपोर्ट अभी बनवा कर लाना है नहीं तो मेरा अमेरिका जाना न हो सकेगा !' इंदिरा जी ने, जो तेजी जी की घनिष्ट मित्रों में थीं, भारत से अमेरिका की एयर इंडिया की पहली उड़ान में दस फ्री जानेवाले यात्रियों में तेजी जी का नाम भी सम्मिलित करवा दिया था। तेजी जी को भय था कि हम लोगों की सहित्यचर्चा के बीच उनका पासपोर्ट का काम रूक न जाय और वे यात्रा से वंचित न रह जायँ। मैंने हँसते हुए कहा, 'भाभी जी ! नाराज मत हों। हम लोग जा रहे हैं।'

परंतु दूसरी बार जब मैं बंबई में बच्चन जी के पास बैठा था तो तेजी जी जो उसी समय बाहर से आयी थीं, बच्चन जी पर फिर उसी प्रकार बरस पड़ीं और तेजी दिखाती हुई बोलीं - अच्छे आदमी हो, इनको घंटों से बिठा रखा है और चाय नाश्ता के लिए भी नहीं पूछ रहे

हो। मैंने इस बार माफी न माँगते हुए कहा, 'भाभी जी, हम लोगों ने खूब जमकर नाश्ता कर लिया है। आप चिंता न करें' इस बार मेरी ज्येष्ठ पुत्री प्रतिभा भी मेरे साथ थी।

बच्चन जी का मुझ पर कितना स्नेह था वह इस संस्मरण के साथ सम्मिलित उनके कुछ पत्रों से व्यक्त हो जायगा। यदि मैंने पत्रों को संभालकर रखने में थोड़ी सावधानी बरती होती तो कितने ही दुर्लभ पत्र और मिल जाते परंतु फिर भी जितने उपलब्ध हैं उनके शब्द-शब्द से बच्चन जी के सहदयता, सरलता, निरभिमानता के गुण तो टपकते ही हैं, मेरे प्रति उनका विशेष स्नेह भी प्रकट होता है। परंतु मैं यह बता दूँ कि यह मेरे अकेले की ही अनुभूति नहीं है। बच्चन जी से जिनका भी संपर्क हुआ है उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यही समझता रहा है कि बच्चन जी उसके प्रति विशेष रूप से स्नेहिल हैं। फिर भी एक घटना तो ऐसी है जो मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए अकल्पित ही कही जायगी और जिसे बच्चन जी का मेरे प्रति विशेष स्नेह ही कहा जायगा —

1962 की बात है। मैं सुप्रीम कोर्ट में अपने एक मुकदमे के संबध में दिल्ली आया था। मुकदमें से छुट्टी पाने पर दूसरे दिन सुबह मैंने बच्चन जी से फोन पर संपर्क किया। मेरा फोन पाते ही वे बोल उठे — गुलाब जी, आप खूब मौके से आये हैं। आज संध्या समय ग्वालियर महाराज द्वारा दी गयी भूमि पर भारत की 14 भाषाओं के लिए एक विशाल भवन का शिलान्यास नेहरू जी करेंगे। उस आयोजन में प्रत्येक भाषा की ओर से उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए अपनी-अपनी भाषा से एक कवि कविता-पाठ करेगा। आपको हिंदी का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी कविता का पाठ करना है। उस आयोजन के स्वागताध्यक्ष थे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त औ.र स्वागतमंत्री थे बच्चन जी। जब मैंने कहा कि मैं वहाँ कैसे पहुँचूँगा, तो उन्होंने कहा 'अवनींद्र कुमार विद्यालंकार (उस समय के प्रसिद्ध लेखक) आपको अपने साथ ले आयेंगे। मैं उन्हें यह जिम्मेदारी सौंप रहा हूँ।' जब मैं आयोजन के

समय से कुछ पूर्व ही सजे हुए पंडाल में पहुँचा तो बच्चन जी ने बढ़कर मुझे गले से लगा लिया और पास खड़े मैथिलीशरण जी से बोले -- देखिए, गुलाब को हम लोगों ने कितनी छोटी अवस्था में देखा था और अब ये कितने बड़े हो गये हैं।' गुप्त जी ने हँसते हुए कहा- 'ये कितने भी बड़े हो जायँ, चिर-तरुण ही रहेंगे।' बच्चन जी का और गुप्त जी का वह वार्तालाप ज्यों-का-त्यों मेरी स्मृति में अंकित है। मैंने गुप्त जी के चरण छूने का बहुत प्रयास किया परंतु उन्होंने मुझे यह गौरव नहीं लेने दिया। बच्चन जी और गुप्त जी ने अपने बीच में सोफे की अगली कतार पर मुझे तब तक बिठाये रखा जब तक नेहरू जी नहीं आ गये। उसके बाद वे दोनों उठकर मंच पर सभा का कार्य-संचालन के लिए चढ़ गये। मैं जिस अगली कतार में बैठा रहा वहाँ अन्य 13 भाषा के कवियों के अतिरिक्त दिनकर जी और अज्ञेय जी भी बैठे थे। इतने बड़े कवियों के रहते हिंदी की और से मुझे काव्यपाठ करने का श्रेय देना बच्चन जी का मेरे प्रति अपार स्नेह नहीं तो और क्या कहा जा सकता है ! मेरे बाद उस समारोह में, लोगों के आग्रह पर, दिनकर जी का भी काव्य पाठ हुआ।

कवितायें तो सभी 13 भाषाओं के कवियों ने पढ़ीं, अपनी-अपनी भाषा में, परंतु असल में तो वहाँ की चुनी हुई श्रोता-मंडली हिंदी-कविताओं को ही भली भाँति समझ सकती थी और उन्हींका आनंद उठा सकती थी। इस लिए बच्चन जी की कृपा से इतने बड़े समारोह में मैं सहज ही विशिष्टता पा गया और टी. वी. ने भी मुझे ही महत्त्व दिया।

बच्चन जी से एक बार जब बंबई में मैं उनके निवास पर मिला और जब मैंने उनसे शिकायत की, 'आप इतने परकोटे के भीतर इतने पहरे में क्यों रहते हैं ! आपके साहित्य के प्रेमी, और साहित्यिक मित्र तो आप से मिलने से रहे' तो उन्होंने छूटते ही कहा - यदि इतना कठिन पहरा न लगा रहे तो लोग अमिताभ को उठाकर ले जायँ। मैंने कहा, 'तो आप दिल्ली में एक अलग बँगला बनवा कर रहें। आपको तो

खुले रूप में रहने पर कोई उठाकर नहीं ले जायगा। वहाँ हम लोग आते-जाते आपसे मिल तो लिया करेंगे।' इस पर वे हँसने लगे।

अंत में उन्होंने जब गुलमुहर पार्क, दिल्ली में रहना शुरू किया तो वे शारीरिक रूप से अत्यंत अशक्त हो गये थे और उनका खुलकर मिलना-जुलना बंद-सा था।

जब मैं दिल्ली में अंतिम बार उनसे मिला तो वे बोले - 'गुलाब जी, आपके लिए ही मैं कमरे के बाहर निकला हूँ नहीं तो मुझे अब बैठकर बातें करने में भी कष्ट होता है।' एक बार अपने वार्तालाप के क्रम में उन्होंने मुझसे कहा था, 'मैंने जीवन में इतना संघर्ष झेला है कि उसने मुझे तोड़ कर रख दिया है।'

बच्चन जी की आत्मकथा जिन्होंने पढ़ी है वे उनकी उक्त बात के मर्म को भली भाँति समझ सकेंगे। परंतु यह भी सत्य है कि उन कष्टों, आघातों और संघर्षों के बीच ही कवि की कविता ने वह रस-रसायन संसार को दिया है जो युग-युगों तक रस की बरसा करता रहेगा और लोगों के जीवन को आनंदित करता रहेगा। बच्चन जी ने 'रस-कलश' में प्रारंभ में ही यह कहा था--

राग के पीछे छिपा चीत्कार कह देगा किसी दिन
हैं लिखे ये गीत मैंने हो खड़े जीवन-समर में

हाँ, उन्होंने जीवन-समर के बीच काल के कठोर प्रहारों को झेलते हुए ही अपना काव्य-सृजन किया है। विष पीकर ही संसार को अमृत का दान दिया है। विषपायी शंकर के समान।

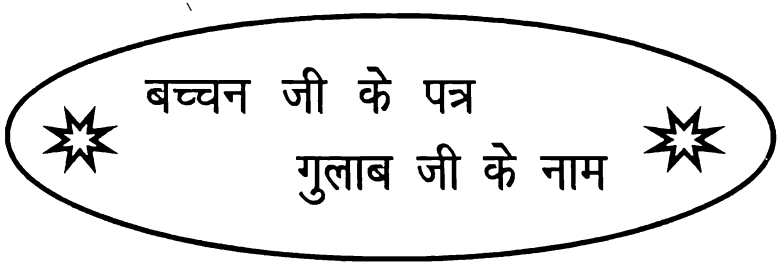
बच्चन जी के पत्र
गुलाब जी के नाम

19 क्लाइवरोड
प्रयाग 8-12-48

प्रिय गुलाब जी,

आपकी भेजी बलि-निर्वास समय से मिल गई थी। अनेक झंझटों में फँसे रहने के कारण मैं आपका आभार समय से स्वीकार न कर सका। रचना उत्तम है। आपसे हिंदी काव्य की शोभा-वृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है। अपनी साहित्यिक प्रगति से हमें सूचित रखें

शेष कुशल
सस्नेह
बच्चन

[illegible]

[illegible]

२. १२. ८२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अंग्रेजी-विभाग
विश्वविद्यालय
प्रयाग 23-3-48

भाई गुलाब,

बनारस में जो तुमने अपनी कृति प्रदान की थी उसके लिए बहुत आभारी हूँ।

रचनायें पढ़ने पर प्रायः ऐसा लगता है जैसे मेरे हृदय का ही एक टुकड़ा विधाता ने तुम्हारे अंदर रख दिया है। मैंने तुम्हारी 'कविता' को अपने उन संग्रहों में रख दिया है जिन्हें मैं फिर-फिर देखना चाहता हूँ।

श्री सुमित्रानंदन जी पंत भी आजकल मेरे साथ ही हैं, उन्होंने भी तुम्हारी रचना पढ़ी और बहुत पसंद की। बोले 'अच्छा लिखता है यह लड़का गुलाब, उसने कई शैलियों का प्रयोग किया है - अपना व्यक्तित्व भी है।' मैंने उन्हीं के शब्दों को रखने का प्रयास किया है।

हम दोनों ही आभारी होंगे अगर तुम अपनी गतिविधि से हमें परिचित रखोगे।

आशा है प्रसन्न हो।

समाप्त करता हूँ।

सस्नेह
बच्चन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] आभारी हूँ।

[illegible] है। [illegible]

[illegible] हूँ।

[illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है।

[illegible]

[illegible] हूँ।

[illegible]

[illegible]

डा. हरिवंश राय बच्चन
एम. ए. पी. एच. डी. (कैन्टन)

13 बिलिंगडन क्रिसेंट, नई दिल्ली-
9-6-65

प के लिए ध।[1]

खैयाम से भेंट का रूपांतर बहुत सुंदर हुआ है। परंतु युग जैसे उन ध्वनियों के लिए अपरिचित हो गया है। शायद ही उसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाय। फिर भी खैयाम क्लासिक है और हर युग में उसका महत्त्व है। क्लासिक का अनुवाद तो फिर-फिर होता है, क्योंकि हर युग उसे अपनी पूरी क्षमता से समझने का प्रयास करता है। मेरी राय में अब जो सीधे फारसी से अनुवाद करेगा उसकी ज्यादा कद्र होगी। फिर भी आपके प्रयत्न के लिए बधाई।

आशा है आप सपरिवार प्रसन्न हैं।

शुभ कामनाएँ
बच्चन

---

[1]बच्चन जी 'पत्र के लिए धन्यवाद' का इस प्रकार संक्षिप्तीकरण कर देते थे।

डा. हरिवंश राय बच्चन,
एम. ए., पी-एच. डी. (केन्टब)

१३, विलिंगडन क्रिसेंट, नई दिल्ली-११

[illegible]

13, बिलिंगडन क्रिसेंट, नई दिल्ली 11

30-11-65

हरिवंश राय बच्चन
एम. ए. पी. एच. डी. (कैंटन)

सम्मान्य बंधु,
जन्मदिन की बधाई के लिए हृदय से आभारी हूँ।
आपने मेरे लिए जो सद्भावनायें व्यक्त की हैं उनका अधिकारी भी बन सकूँ।
'उषा' मुझे नहीं मिली।
देखने को उत्सुक हूँ।
अपने और परिवार के सब सदस्यों के मंगल-कल्याण के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।
याद करने के लिए अनेक धन्यवाद

सादर
बच्चन

हरिवंश राय बच्चन,
एम. ए., पी-एच. डी. (कैन्टब)

१३, विलिंगडन क्रिसेंट, नई दिल्ली-११
30 । 11 67

[illegible]

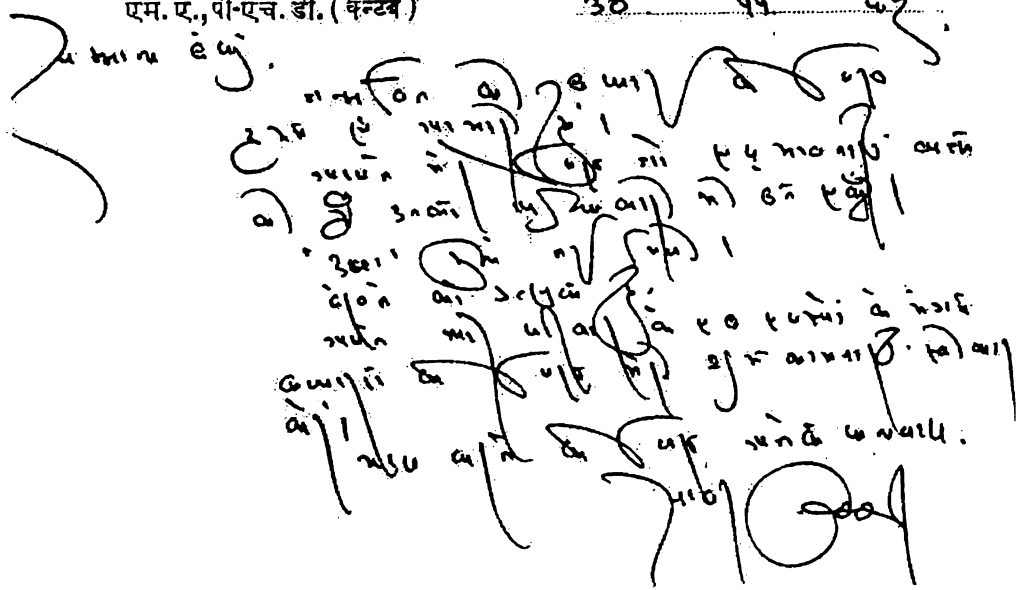

13 विलिंगडन क्रिसेंट
नई दिल्ली - 11

14-9-66

सम्मान्य बंधु,

मेरा पिछला कार्ड मिल गया होगा। यह पत्र 'उषा' पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने को लिख रहा हूँ।

पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि रचना मुझे रोचक लगी। प्रायः एक बैठक में ही मैं पूरी पुस्तक पढ़ गया। पथिक, प्रिय-प्रवास और कामायनी—पंत की ग्रंथि को भी उसमें सम्मिलित कर लेना चाहिए— तीनों की रचना शैली में जो मनोहर है उसे आपने किसी कौशल से बिल्कुल निजी बना लिया है।

हालाँकि इसे महाकाव्य कहा गया है, पर ऐसा लगा कि इसे खंडकाव्य कहा जाता तो संभवतः अधिक उपयुक्त होता। महाकाव्य में युग, समाज, जीवन की जिस व्यापक ध्वनि को मैं सुनना चाहता हूँ, वह, मुझे आप क्षमा करेंगे, मुझे 'उषा' में नहीं सुनाई पड़ी। कतिपय स्थानों में विषय को विस्तृत करने के प्रयत्नों के बावजूद रचना का मूल विषय भारतीय नारी का या पत्नी का - उषा और किरण दोनों के रूप में, मर्यादावद्ध, उदात्त, समर्पणाशील, सहिष्णु प्रेम ही है। भावना परिचित, प्राचीन और संस्कारजन्य है। उसके कारण सांकेतिक भी सूक्ष्म अभिव्यक्तियों से रस-निष्पत्ति हो गई है। अभिव्यक्ति में शायद ही कहीं ऐसी वक्रता, अथवा मौलिक रूपक - उत्प्रेक्षा का आश्रय लिया गया है जो चौंका दे अथवा नवानुभूति-प्रसूत हो। सहजता ध्येय हो तो यह गुण है, पर उससे काव्य के प्रति वह आकर्षण नहीं जागता जो दिनकर अपने उक्ति के वैचित्र्य से 'उर्वशी' के प्रति जगा देते हैं। उर्वशी के ताप की तुलना में उषा ठंडी लगेगी।

मैं काल्पनिक वृत्त के विरुद्ध नहीं, पर उसे स्वाभाविक और सजीव होना चाहिए। उषा का वृत्त ऐसा नहीं बन सका।

फिर भी अपनी कई सीमाओं के बावजूद मैं उसे सफल रचना कहूँगा। कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

अपनी प्रतिक्रिया को स्पष्टता से व्यक्त करने के लिए, आशा है, आप मुझे क्षमा करेंगे।

शुभकामनायें

सादर

बच्चन

[illegible]

13 वि. क्रि. न. दि. 11

सम्मान्य बंधु, 22-2-71

पत्र के लिए ध।

क्या भूलूँ ... आपको पसंद आयी — मेरी लेखनी सफल हुई।

दूसरा भाग - 'नीड़ का निर्माण फिर' और 'प्रवासी की डायरी' निकल चुकी है। रुचि हो तो, देखें।

'रूप की धूप' रत्नाकर जी ने नहीं भेजी।

शेष कुशल शु.का.

सादर

बच्चन

૧૩. [illegible] ૧૦-૧૧
૨૨-૨-૭૧

[illegible]

19-2-72

'रूप की धूप' देखी।
आपके कवि की प्रौढ़ कृति।
बधाई।
आपकी कीर्ति बढ़ाये।
मैं स्थानांतरण की स्थिति में बंबई स्थायी रूप से बसने जा रहा हूँ।
बेटे के पास -

बच्चन

नया पता : --
C/ o Amitabah Bachchan
20 Residential Society
North-South Road No. 7
Juhu Parle Scheme
Bombay - 56

[illegible]

[illegible] :

c/o Amichand Dahelal
20, President Society
North - Swami Road
no. 4
Jalu - Parle Scheme
Boubay - 56.

बंबई

14-6-73

सम्मान्य बंधु,

अमित-जया की बधाई के लिए बच्चन परिवार का आभार स्वीकार करें। स्वास्थ्य अवस्थानुसार है।

मैं अब लेखन-मुक्त हो गया हूँ।

जीवन में कुछ विश्राम भी बदा था।

'सौ गुलाब खिले' की सफलता के लिए मेरी शुकामनाएं।

जो शेर भेजे कमाल के हैं।

ज्यादा शेर लिखकर सख्ती से चुनाव करें।

आपके मंगल-कल्याण के लिए मेरी शुभकामनाएं

बच्चन

सम्मान्य बंधु
'सौ गुलाब खिले' के लिए
धन्यवाद
आपकी बहुमुखी प्रतिभा का नव रूप, नव विकास।
सज्जन-प्रिय होने के साथ जन-रंजन भी हो

सादर
बच्चन

सम्मान्य बंधु

16-1-76

पत्र - एवं भावना के लिए आभारी हूँ आपकी कृति 'आलोकवृत्त' समय से मिल गयी थी। धन्यवाद।

मैं उसे पूरी पढ़ चुका हूँ।

आपकी कृति से गाँधी-साहित्य में निश्चय ही वृद्धि हुई है।

मेरी कामना है कि आपकी कृति जन-रंजन और सज्जन-प्रिय सिद्ध हो।

मेरा स्वास्थ्य संतोषजनक पर लिखना पढ़ना प्रायः पत्रों तक सीमित। अपने मंगल-कल्याण के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

सादर

बच्चन

अमिताभ बच्चन
प्रतीक्षा
144, उत्तर-पश्चिम, रास्ता 10वाँ
बंबई - 400016

amitabh bachchan
10, PRESIDENCY SOCIETY
NORTH SOUTH ROAD 7,
JUHU PARLE SCHEME
BOMBAY 400056.

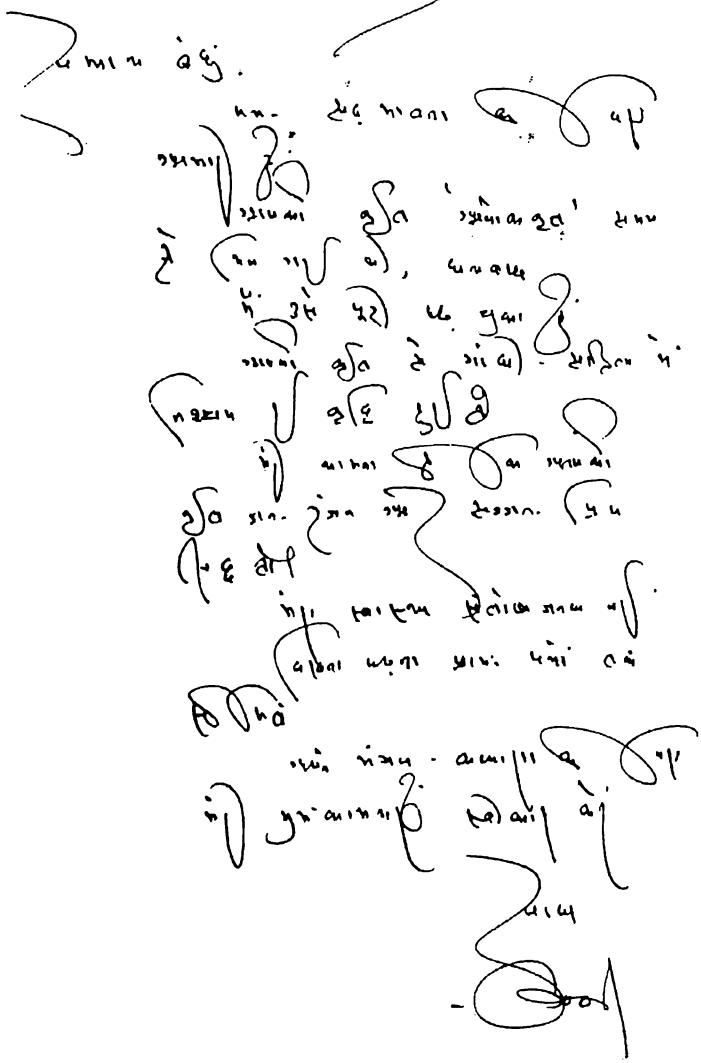

अमिताभ बच्चन
'प्रतीज्ञा'
14 उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवाँ
बंबई - 400056

सम्मान्य बंधु, 16-10-76

पत्र के लिए धन्यवाद

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि गया के प्रबुद्ध साहित्यकारों की ओर से महाकवि गुलाब खंडेलवाल का अभिनंदन-समारोह आयोजित किया जा रहा है।

अधिक प्रसन्नता होती यदि यह आयोजन अखिल भारतीय स्तर से होता।

फिर भी गयावासी इस आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं, प्राय : निकट के लोग सम्मान्य को भी सम्मान-योग्य नहीं समझते।

कहावत प्रसिद्ध है —

घर का जोगी जोगना
आन गाँव का सिद्ध

आपने घर के जोगी को 'जोगना' न समझ कर 'सिद्ध' समझा यह आपका बड़प्पन है।

इस अवसर पर अपने अभिनंदन के स्वरों में एक स्वर मेरा भी मिला दें।

मैं गुलाब जी का प्रशंसक शुरू से रहा हूँ - मेरी ओर से बधाई दें। शायद मैं उम्र में उन से बड़ा हूँ, आशीर्वाद देने का अधिकारी भी हूँ।

वे स्वस्थ, सानंद, सृजन-सक्रिय रहते हुए शतंजीवी हों।

याद करने के लिए धन्यवाद

शुभ कामनाएं बच्चन

यह पत्र 1976 में गया में गुलाब जी के अभिनंदन-समारोह के लिए बच्चन जी ने भेजा था

४०

अमिताभ बच्चन

'प्रतीक्षा'

बम्बई-४०० ०४९.

१५. १०.

[illegible]

'प्रतीक्षा'
अमिताभ बच्चन' 10 वीं नोर्थ-साउथ रोड़
जुहू-पारले स्कीम
बंबई 400047

सम्मान्य बंधु, 11-2-80

पत्र और पुस्तकों के लिए धन्यवाद।

धीरे-धीरे यथा समय उन्हें देखूँगा। संभव हुआ तो अपनी प्रतिक्रिया भी दूँगा। पढ़ने-लिखने की शक्तियाँ अब सीमित हैं। 73वें में पहुँच गया हूँ और वृद्धावस्था के कई रोग लग गये हैं।

अपने मंगल-कल्याण के लिए मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें

सादर

बच्चन

प०

अमिताभ बच्चन

'प्रतीक्षा',
१०वी नॉर्थ-साउथ रोड,
जूहू-पारले स्कीम,
बम्बई ४०००४९

११. २. '८०.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

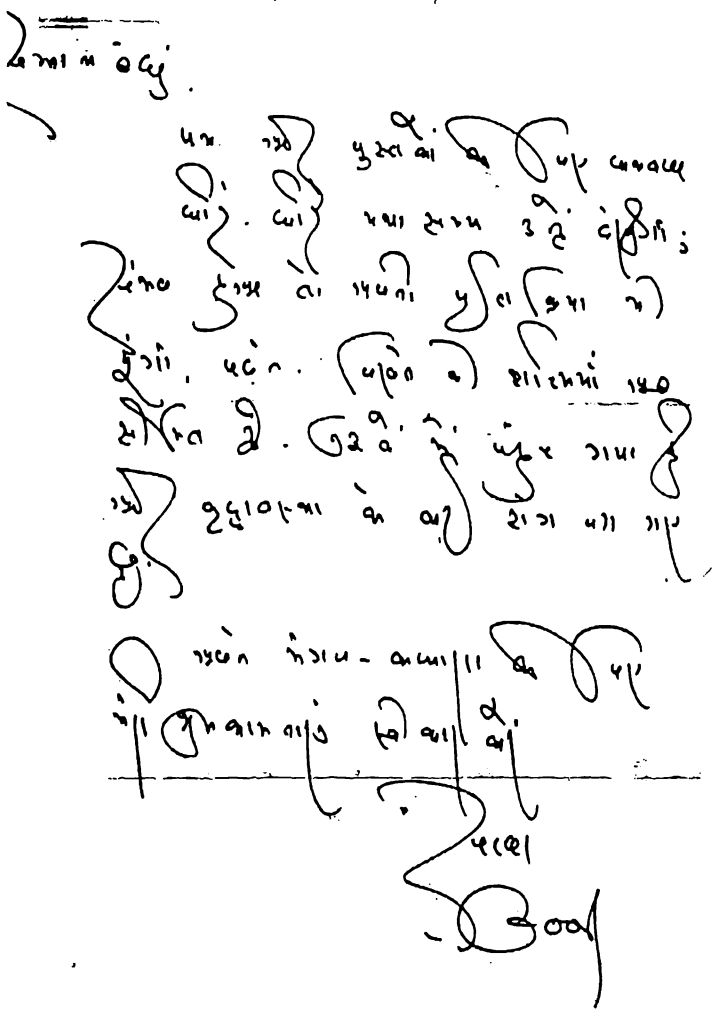

बी-8 गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली
दिनांक : 22 अक्टूबर, 1985

हरिवंश राय बच्चन

प्रिय खंडेलवाल जी

आपका 11 अक्टूबर 1985 का पत्र मिला। आपने अपने बारे में जो विस्तार से जानकारी दी, वह जानकर अच्छा लगा।

आपने 'सोपान' से दशद्वाार तक' के बारे में जो प्रतिक्रिया दी है, वह आपकी मेरे प्रति सद्भावना का ही प्रतीक है।

पिछले कई महीनों से मैं बीमार चल रहा हूँ और लगभग एक महीना अस्पताल में रहकर अभी घर लौटा हूँ। ऐसी संभावना है कि मुझे शायद फिर प्रोस्टेट के आपरेशन के लिए अस्पताल में भरती होना पड़े। जब आप दिल्ली आयें तो 667555 पर फोन-संपर्क कर लें।

अगर मैं घर पर हुआ और मेरी तबीयत इस लायक हुई तो आपसे मिलने का सुयोग बन सकेगा।

आपका
बच्चन
(हरिवंश राय बच्चन)

हरिवंश राय बच्चन

बी-8, गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली
दिनांक : 22 अक्तूबर, 1985

प्रिय खण्डेलवाल जी,

आपका 11 अक्तूबर, 1985 का पत्र मिला। आपने अपने बारे में जो विस्तार से जानकारी दी, वह जानकर अच्छा लगा।

आपने "सोपान से दशद्वार तक" के बारे में जो प्रतिक्रिया दी है, वह आपकी मेरे प्रति सद्भावना का ही प्रतीक है।

पिछले कई महीनों से मैं बीमार चल रहा हूँ और लगभग एक महीना अस्पताल में रहकर अभी घर लौटा हूँ। ऐसी संभावना है कि मुझे शायद फिर प्रोस्ट्रेट के ऑपरेशन के लिए अस्पताल में भरती होना पड़े। जब आप दिल्ली आएं तो 667555 पर फोन संपर्क कर लें। अगर मैं घर पर हुआ और मेरी तबियत इस लायक हुई तो आपसे मिलने का सुयोग बन सकेगा।

आपका

हरिवंश राय बच्चन